P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-IV* December-2015

म.प्र. के पश्चिमी क्षेत्र के भील समुदाय की कलात्मक अभिव्यक्ति

साधना चौहान
विभागाध्यक्ष,
चित्रकला विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर कालेज,
धार, म.प्र.

वैदही नामजोशी
शोधार्थी,

सारांश

कला कम या ज्यादा प्रकृति से प्रभावित होकर प्रतिकृति रचती है। आदिवासियों की कला को धर्म ने अत्यंत मनोरंजक ढंग से प्रभावित किया है। म.प्र. के पश्चिमी क्षेत्र के भील लोको में प्राचीन काल से ही पवाहित मान्यताएं, उत्सव, तथा विश्वास कई अनेका रूपों में अभिव्यक्त होती चली आयी हैं। कभी गीतों में, कभी नृत्य में, कभी उत्सवों में, कभी गायन में, कभी पार्थीव प्रतिमा निर्माण में तथा कभी भूमि या भित्ति को पूज्य भाव से अंलकृत करने मे वह अपने आत्मिक आंनद की प्राप्ति करते है।

मुख्य शब्द : भीली कलात्मकता।

प्रस्तावना

प्राकृतिक संपदा से संपन्न हमारे देश में भौगोलिक विविधता के कारण कई प्रकार की जातियां एवं जनजातियां पायी जाती हैं, जिन पर हर क्षेत्र विशेष की अपनी अलग छाप होती है। हमारे देश में जो सांस्कृतिक वैविध्य देखने को मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। मध्यप्रदेश भी इससे अछूता नहीं है। अलग अलग भौगोलिक एवं प्राकतिक रचना के कारण मध्यप्रदेश में अलग अलग जनजातियां पायी जाती हैं। जिसमें भील, बैगा, गौंड़, कोरकू, कोल सहरिया, भिम्मा तथा भारिया आदि जनजातिया मुख्य है। हर एक जनजाति की अपनी एक अलग सांस्कृतिक परम्परा हैं।[1]

''वर्तमान म भारत में भीलों का वास मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात,एवं महाराष्ट्र में प्रमुख रूप से है। मध्यप्रदेश के पर्वतीय वनखण्डों में भीलों का विस्तार अधिक हैं। पश्चिमी म.प्र. में प्रमुख रूप से धार, अलिराजपुर, झाबुआ, भाबरा, रतलाम, जिलो एवं राजगढ़, सरदारपुर, में भीलों का वास अधिक है।''[2]

भील समुदाय की कलात्मक अभिव्यक्ति

भील समुदाय की सामाजिक संस्कृति, उसकी भौतिक जिंदगी , उसके इस्तेमाल की तमाम चीजों से अलहदा नहीं की जा सकती। काल्पनिक लोक की शक्ति और वास्तविकता के संबंध में इनकी कल्पना अत्यंत प्रबल है। इनका विचार है कि इनके देवी, देवता, भूत, प्रेत और इनके पूर्वजो की आत्माएं , पशु, पक्षी, गाय, बैल, मोर, आदि इन आदिवासियों को विविध रूपों में दिखाई देते है। और ये समय समय पर इनके प्रति अपनी भावनाओं को विविध रूपों में अभिव्यक्त करते रहते हैं।

एक विशिष्ट जनजातीय परिवेश और सांस्कृतिक परम्परा की अंर्तछाया में कोई जनजातीय कलारूप आकार लेता हैं तो वह एक खास तरह की स्थानिकता और सांस्कृतिक बोध को अभिव्यक्त करता है। जो कि किसी दूसरी परम्परा में सम्भव नहीं होता। रूपों के बीच भी एक विशेष अंर्तक्रिया देखने में आती है। जनजातीय नृत्यों की संगीत परम्परा और मौखिक साहित्य के साथ

शिल्प परम्परा का चित्रों और जनजातीय आध्यात्मिक विश्वासों के साथ गहरा संबंध है।

भील जनजाति भी अपने मन के भावों को निम्न लिखित माध्यमों से अभिव्यक्त करती है।

नृत्य

''भील समुदाय विभिन्न अवसरां पर अपने आत्मिक आंनद को नृत्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता हैं। इसमें ''घ्मर'' और ''गैर''मुख्य हैं। इसके अलावा भगौरिया पर्व पर किया जाने वाला नृत्य भी उंमग और उल्लास का प्रतीक है। साथ ही ''डोहिया'' नृत्य भी किया जाता है। होली के अवसर पर ''गहर'' नाच होता हैं। उसी प्रकार ग्यारस से दीपावली तक ''डोहो'' नृत्य किया जाता है। दीपावली पर कहीं कहीं ''गरबी'' नृत्य भी किया जाता है। ''वीरवाल्या'' एक धार्मिक नृत्य हैं जो श्रावण माह और नवरात्रि में बड़वा द्वारा किया जाता हैं।''[3]

चित्रों के माध्यम से

''भील मांगलिक अवसरों को अधिक समधुर व आनंदमयी बनाने के लिए घर की भित्ति पर अलंकरण करते हैं। जिन्हें ''गोतरेज'' कहा जाता हैं। ये चित्र मृतात्मा के सम्मान में रोगों को दूर करने तथा खेतों मे पैदावार बढ़ाने की कामना से और कुछ विशेष अवसरों पर बनाये जाते हैं।''[4]

''इसके अलावा भील घर की अंदर को भित्ति पर ''पिठौरा'' बनाते हैं। भिली चित्र परम्परा का यह सबसे सुंदर उदाहरण है। भील समुदाय प्रकृति के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। वे पेड़ – पौधो आदि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में किसी न किसी शक्ति अथवा देवता का वास मानते हैं। भीलजन उसी शक्ति को प्रतीकात्मक चित्रित कर उसकी पूजा करते हैं। ''[5]

शिल्प परम्परा

''जब किसी भील स्त्री या पुरूष की दुर्घटना या किसी शौर्य प्रदर्शन के वक्त मृत्यु हो जाती है तो मृत्यु के पश्चात् मृत व्यक्ति की स्मृति में पत्थर के शिल्प गाड़े जाते हैं जिसे ''गाता'' या ''गातला'' कहते है । इस पर विभिन्न आकृतियां उकेरी जाती है।''[6]

''इसके अलावा अपने किसी कार्य के सिद्ध हो जान के पश्चात् मिट्टी के घोड़े या ढाबे बनाकर चढ़ाये जाते है।''[7]

निष्कर्ष

इस तरह हम कह सकते है कि, यूं तो हर व्यक्ति किसी ना किसी माध्यम से अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करता रहता हैं, किंतु भील समुदाय के लोगो के मन के भावों की अभिव्यक्ति प्रकृति से प्रभावित होती हैं, इसलिए उसमें कृत्रिमता का आभाव होता हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ''भीलों के बीच बीस वर्ष''– डॉ. शोमनाथ पाठक प्रभात प्रकाशन सन् 1983 दिल्ली।
2. ''सम्पदा'' सम्पादक डॉ. कपिल तिवारी , आदिवासी लोककला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद्, सन् 2010, भोपाल पृ.स.196।
3. ''सम्पदा'' सम्पादक डॉ. कपिल तिवारी, आदिवासी लोकला अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद् सन् 2010 भोपाल पृ.सं.283–285।
4. ''सम्पदा'' सम्पादक डॉ. कपिल तिवारी, आदिवासी लोककला अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद् सन् 2010 भोपाल पृ.सं. 290।
5. ''पिठौरा'' – वंसत निरगुणे एवं भानुशंकर गेहलोत , आदिवासी लोककला एवं तुलसी साहित्य अकादमी वर्ष 2011 भोपाल पृ.सं. 9।
6. ''भील देवलोक'' भानुशंकर गेहलात एवं धर्मेद्र पारे, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, वर्ष 2013 भोपाल पृ.सं. 132।
7. ''भीलदेवलोक'' भानुशंकर गेहलोत एवं धर्मेंद पारे, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, वर्ष 2013 भोपाल पृ.सं. 76।